RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 6 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 14 जुलाई 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

पोल खोलता ढोल

गाँव-गाँव क्वीड़-कौतिक टांज-पांज

कार्यालय प्रतिनिधि

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव का ढोल जोर से बजने लगा है। मानसून की तड़तड़ाट के बीच दूसरों की पोल खोलने का काम यही ढोल कर रहा है। ग्राम प्रधान से लेकर जिला पंचायत तक प्रतिनिधि कैसे हों, इस बात को लेकर घर-घर चर्चा हो रही है लेकिन अपने इलाके के राजनीतिक गणित का जादू इस पूरे चुनाव में देखने को मिल रहा है। बड़ी पार्टियों में भाजपा और कांग्रेस का निशाना 2027 के विधानसभा चुनाव भी हैं इसलिये उनका लक्ष्य त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में पूरी तरह घेराबाड़ी का है। महेन्द्र भट्ट को भाजपा का फिर से अध्यक्ष बनाने के पीछे भी कारण माना जा रहा है कि पार्टी संगठन के तार हर प्रकार से कस कर रखे जाएं। चुनाव पर चारों ओर चौकसी के लिये संगठन ने जाल बिछाया है। भाजपा के दमदार नेताओं का किसी सीट पर आपसी टकराव न हो इसके लिये सूझबूझ वाले चेहरों को काम पर लगाया गया है। कांग्रेस की ओर से करन माहरा और नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य की रणनीति भी कम नहीं है। संगठन के जिम्मेदार लोगों को लेकर बैठकों का दौर करने के बाद उनके प्रचार अभियान ने गति पकड़ ली है। रणजीत सिंह रावत, खजान गुड्डू, ललित फर्स्वाण, महेन्द्र सिंह लुण्ठी सहित तमाम बड़े नेता पार्टी द्वारा दी गई जिम्मेदारी के लिये चौकस हैं।

इस बीच भाजपा-कांग्रेस की ओर से जारी सूची में प्रत्याशियों के नाम देखने के बाद साफ हो गया है कि दबदबा रखने वाले पूर्व जनप्रतिनिधियों को अवसर दिया गया है। इनके द्वारा किये गये कार्यों को गिनाया जा रहा है जबकि 'पोल खोलता ढोल' सब सुन रहे हैं।

सुनीता कुंजवाल खांकर से मैदान पर

अल्मोड़ा। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गोविन्द सिंह कुन्जवाल की बहू सुनीता खांकर से जिला पंचायत सदस्य सीट से चुनाव मैदान पर हैं। इससे नई हलचल है और माना जा रहा है कि ससुर की राजनीतिक विरासत बहू संभाल लेंगी।

श्वेता बिष्ट शंकरपुर भूल से

नैनीताल। रामनगर विधायक की बहू श्वेता बिष्ट फिर से शंकरपुर भूल से क्षेत्र पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ रही हैं। पिछली बार भी जनता ने उन्हें जिताया था लेकिन ब्लाक प्रमुख कुछ मतों से हार गई थीं।

संजय नेगी से दिलचस्प मुकाबला

रामनगर। पूर्व ब्लाक प्रमुख संजय नेगी ढेला से बीडीसी चुनाव लड़ने के अलावा उनकी पत्नी मंजू को शंकरपुर भूल से सफलता चाहती हैं। इनके चुनाव मैदान में होने से दिलचस्प मुकाबला बना है।

बीना परगाई का मैदान में उतरना..

गंगोलीहाट। जिला पंचायत क्षेत्र सुगड़ी से बीना परगाई का चुनाव मैदान में उतरना कोमल परगाई की आज तक की मेहनत व सम्पर्क की परीक्षा होगी। भाजपा ने इस सीट पर श्रीमती भगवती मेहरा को उतारा है। गंगोली का यह मुकाबला जोरदार रहेगा।

भारत के मीलपत्थर

आचार्य द्रोण को किस बात के लिए याद किया जाए?

सूर्यकान्त बाली

इतिहास भी कई बार मजेदार काम करता है। कुछ नामों के साथ तो वह उपलब्धियों का अम्बार लगा देता है कि हम बस गिनते ही रह जाते हैं। उधर कुछ नमों के साथ वह असफलताओं एवं अभिशापों का ऐसा सिलसिला जोड़ देता है कि हम उसे एक बार पढ़-सुनकर देबार याद नहीं करना चाहते। सवाल है कि अचार्य द्रोण को इन दो वर्गों में से किसमें रखा जाए? द्रोण हमारे इतिहास का एक बड़ा नाम तो है। बड़ा है तभी तो इस देश के चन्द बड़े नामों की तरह यह नाम भी देश के जन सामान्य की जुबान पर चढ़ा है। पर न तो यह कोई ऐसा नाम है, जो कौरवों की तरफ होने के बावजूद सिर्फ धिक्कार फटकार के ही लायक है और न ही यह कोई ऐसा नाम है, जिसके साथ कोई बड़ी उपलब्धि जुड़ी हुई हो। हाँ, एक उपलब्धि आचार्य द्रोण के साथ जरूर जुड़ी है कि वे अपने समय के सर्वश्रेष्ठ योद्धा-ब्राह्मणों में हैं, जिन्हें हम आयुध जीवी ब्राह्मण कहते हैं, पर इस एक खास विशेषता को छोड़ दें तो बाकी क्या है?

बाकी यह है कि द्रोणाचार्य के नाम के साथ ऐसी अनेक घटनाएं एवं बातें जुड़ी हैं, जो उन्हें उस ऊँचाई के योग्य सिद्ध नहीं करतीं, जिस ऊँचाई तक वे अन्यथा पहुँचे नजर आते हैं। मसलन कुछ बातें देख ली जाएं। द्रोण और द्रुपद एक ही गुरु के विद्याकुल में पढ़ते थे। इतने घनिष्ठ कि द्रुपद ने वायदा कर दिया कि जब वह राजा बनेगा तो अपना आधा राज्य द्रोण को देगा। वेस मौका आने पर जब द्रोण द्रुपद से आधा राज्य माँगने गए तो द्रुपद ने द्रोण का अपमान कर दिया। फिर पता है, द्रोण ने क्या किया? मन ही मन द्रुपद से बदला लेने का संकल्प कर दिया और द्रोण का शेष जीवन अपने इस प्रतिशोध भरे संकल्प की पूर्ति में ही खर्च हो गया। महाभारत युद्ध में भीष्म के शरशय्या पर गिर जाने के बाद द्रोण कौरब सेना के सेनापति बने तो युद्ध में द्रुपद को मारकर द्रोण ने अपने जीवन की महत्वाकांक्षा पूरी की और सेनापति बनने के बाद पाँचवे दिन द्रोण स्वयं भी मार डाले गए।

गुरु के रूप में द्रोण ने कोई अनुकरणीय मानदण्ड कायम नहीं किए। महाभारतकार दो ऐसे नमूनों से हमारा परिचय कराता है कि जिनके कारण हम द्रोण को गुरु के रूप में शिष्यों के बीच भेदभाव करने वाला और पक्षपाती माने बिना नहीं रह सकते। अपने पुत्र अश्वत्थामा को कौरवों और पाण्डवों से अधिक शस्त्रज्ञान देने के लिए द्रोण ने दो काम किए। वे अश्वत्थामा को पानी भरने के लिये बड़े मुँह वाला घड़ा दिया करते, जबकि शेष शिष्यों को तंग मुँह वाला घड़ा दिया करते। इसलिए जहाँ बाकी शिष्य देर तक पानी भरते रहते, वहाँ अश्वत्थामा अपने काम से जल्दी निवृत्त होकर लौट आते। तब द्रोण अश्वत्थामा को अकेले में धनुर्विद्या के कुछ नायाब गुर सिखा देते। ऐसे ही द्रोण ने अश्वत्थामा को रात के अँधेरे में लड़ने की विद्या सिखाई, जिसका उपयोग अश्वत्थामा ने महाभारत युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद रात्रि को पाण्डव सेना के भीषण संहार के रूप में किया। यह अलग बात है कि अर्जुन ने अपनी निपुणता से अन्ततः द्रोण की यह चोरी-छिपे सिखाने की सुविधा खत्म कर दी और वह सब कुछ सीख लिया, जो अश्वत्थामा ने अकेले और गुपचुप सीखा था, पर द्रोण का चरित्र तो सामने आ ही गया।

पक्षपात का दूसरा नमूना अर्जुन के बारे में है। जब अपनी निपुणता से अर्जुन ने द्रोण को बाध्य कर दिया कि वे उसे वह सब कुछ सिखाएं, जो अश्वत्थामा को चुपचुप सिखाया जा रहा था तो द्रोण इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अर्जुन को पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाने की ठान ली। प्रयतिष्ये तथा कर्तु यथा नान्यो धनुर्धरः। त्वत्समो भविता लोके सत्यमेतद् ब्रवीमि ते (महाभारत, आदि पर्व 131.27)। द्रोण अपनी इस नई महत्वाकांक्षा में इतने मोहान्ध हो गए कि एकलव्य का कैरियर खत्म करने के लिये उस भील बालक के दाहिने हाथ का अँगूठा गुरु दक्षिणा में माँगते हुए उनकी वाणी नहीं कांपी।

भेदभाव और पक्षपात के इन दो जबर्दस्त उदाहरणों में से एकलव्य से किया गया क्रूरतापूर्ण व्यवहार आचार्य द्रोण की छवि को एक ही झटके में अपयश के रसातल में डुबो देता है। पहले तो द्रोण ने एकलव्य को धनुर्विद्या देने से ही मना कर दिया। हालाँकि द्रोण के तर्क में वजन नहीं है फिर भी मान लेने में कोई हर्ज नहीं कि राजकुमारों को सिखाने के लिए प्रतिबद्ध हो चुके द्रोण ने भील कुमार को अपना शिष्य बनाने से मना कर दिया, पर जब एकलव्य ने द्रोण की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर और उसी में गुरु के प्रति अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा का आधान कर अपने ही प्रयासों से विद्या पा ली तो अर्जुन की सर्वश्रेष्ठता बरकरार रखने के लिए एकलव्य का अंगूठा काटने की क्या जरूरत थी? यह द्रोण के चरित्र का अमानवीय पक्ष है।

पर द्रोण के चरित्र के दो इतने ही नकारात्मक पक्ष और भी तो हैं। पहला

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

प्रधान अपने ग्राम का पहरुवा होना चाहिये

उत्तराखण्ड में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव का चरम दिखाई दे रहा है। ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत के लिये चुनाव मैदान में उतरे लोग अपने समर्थकों के साथ अभियान में लगे हैं जबकि प्रशासनिक अमला पूरी व्यवस्था की चौकसी कर रहा है। चुनाव का यह दौर आने वाले पाँच सालों के लिये गाँव की सरकार चुनने में मदद करेगा। चुनाव की यह प्रक्रिया अन्तराल में होती रहती है और हमारे प्रतिनिधि हमारी आवाज होते हैं। यह भी बहुत स्पष्ट है कि वर्तमान के बहुत कम ग्राम प्रधान होंगे जो जनसेवा के लिये याद किये जा रहे हैं! ऐसा क्यों? जिला पंचायत सदस्यों का दांव तो बहुत महंगा मान लिया गया है। भारी-भरकम खर्चे पर चुनाव जीतना हर किसी के बूते की बात नहीं होता।

चुनाव के इस पूरे जंजाल की तह में जाया जाए तो पता चलता है कि अपने ग्राम को सुख-समृद्ध बनाने के लिये हमें पहरुवा चाहिये। इसी लिये ग्राम प्रधान चुना जाता है। पुराने समय में पधान की जिम्मेदारी होती थी कि वह अपने इलाके का ध्यान रखे और वह निभाते भी थे। गाँव के सुख-दुःख में पधान सबसे अग्रणीय होता था और मान्यता थी कि घर-गाँव के किसी भी विवाद को उनके स्तर पर ही न्याय मिल जायेगा। यही प्रक्रिया आगे के पदों में भी मानी जाती है। जिला स्तर पर तो और भी ज्यादा जिम्मेदारी हमारे जनप्रतिनिधियों की होती है। इतनी बड़ी जिम्मेदारी और मान्यता के बाद क्या हमारे जन प्रतिनिधि अब अपनी इस योग्यता पर खरे हैं?

चुनाव की पूरी प्रक्रिया को मात्र मशीन समझना या बहकते हुए मतदान करना न्याय नहीं होगा। इसके लिये सजगता जरूरी है। इसकी शुरुआत अपने ग्राम से ही करें क्योंकि हमें पहरुवा चाहिये जो ईमानदार हो।

लख्वीगांव से दीपक महर का दांव

डीडीहाट। लख्वीगांव से युवा दीपक सिंह महर दांव नई शुरुआत है। क्षेत्र पंचायत सदस्य के लिये चुनाव मैदान में उतरे दीपक मेहनती उद्यमी और मिलनसार होने के कारण सबके चहेते रहे हैं। चुनाव का दौर तो परिणाम ही बताएगा।

रेखा भण्डारी पीपली से दमदार

बेरीनाग। पूर्व ब्लाक प्रमुख रेखा भण्डारी पीपली (राईआगर) से चुनाव मैदान में दमदार प्रत्याशी के रूप में दिखाई दे रही हैं। कांग्रेस पृष्ठभूमि के परिवार हयात सिह भण्डारी की बहू और स्व.हीरा सिंह की पत्नी रेखा जुझारु नेता रही हैं।

उषा भण्डारी का दांव भण्डारीगांव से

बेरीनाग। राईआंगर के सक्रिय नेता और समाजसेवी ललित भण्डारी की पत्नी और अपने आप भी सामाजिक कार्यों में अग्रणीय उषा भण्डारी ने भण्डारीगांव से प्रधान पद के लिये दांव चला है। उनके समर्थक पहले से ही क्षेत्र में प्रचार में जुट गये थे।

भावना फर्स्वाण पय्याँ से दृढ़

गरुड़/बागेश्वर। पय्याँ-तल्ला पय्याँ मल्ला पय्याँ से ग्रामप्रधान के लिये भावना फर्स्वाण पत्नी हरीश चन्द्र फर्स्वाण का जबर्दस्त अभियान क्षेत्र में हलचल मचा रहा है। फर्स्वाण दम्पत्ति ने ग्रामवासियों को भरोसा दिलाया है कि वह क्षेत्र के विकास के लिये अपनी परम्परा को आगे ले जाएंगे।

हल्द्वानी में प्रचण्ड अभियान में घिरे हैं

हल्द्वानी। पंचायत चुनाव के लिये प्रचण्ड अभियान में घिरे नेताओं की रणनीति एकाएक किसी के समझ में नहीं आ रही है। भाजपा के चर्चित नेता प्रमोद तोलिया की चाह फिर से जिला पंचायत मुखिया की सीट पर होगी। रामड़ी आनसिंह से श्रीमती बेला तोलिया के लिये पहले से ही उनका अभियान है। नगर निगम चुनाव में भी उनका नाम चर्चा में था लेकिन पार्टी टिकट नहीं मिल पाया था। इसी प्रकार देवलचौड़ बन्दोबस्ती से पार्टी के वरिष्ठ नेता निवर्तमान जिला पंचायत उपाध्यक्ष आनन्द सिंह दरम्वाल प्रत्याशी के रूप में श्रीमती दीपा दरम्वाल के लिये पूरी ताकत लगा चुके हैं।

गणाई में पंकज बोरा सक्रिय

गंगोलीहाट। गणाई जिला पंचायत क्षेत्र में पंकज सिंह बोरा सक्रिय हैं। कांग्रेस के युवा नेता और छात्र संघ में लोकप्रिय रहे पंकज बोरा क्षेत्र की राजनीति में काफी बढ़चढ़ कर शुरू से रहे हैं। इसलिये उनके पक्ष में युवाओं की काफी संख्या दिखाई दे रही है।

नन्दन बाफिला थल में फिर से जुटे

बेरीनाग। जिला पंचायत थल की सीट के लिये भाजपा के नन्दन सिंह बाफिला फिर से अभियान में जुटे हैं। अपनी बात व्यवहार के लिये श्री बाफिला क्षेत्र में काफी जाने जाते हैं। श्रीमती बाफिला भी ब्लाक प्रमुख के रूप में सक्रिय रही हैं।

फसक

दाज्यू, चुनाव के दिन भी गजब होने वाले ठैरे

कार्मिकों की दौड़ और प्रचारकों की भगाभाग जरूरी है बल

दाज्यू, आजकल हमारा मगनुवा बहुत खुश है। पार्टी वालों ने जब से उसे इलाके का प्रचारक बना दिया है, वह अपने घर कम और दूसरों के वहाँ ज्यादा रहने लगा है। दाज्यू, चुनाव के दिन भी गजब होने वाले ठैरे। किसी का प्रचार, किसी का नाश्ता, किसी को सुझाव और किसी को झांसा। गाँव-घर के चुनाव में और भी ज्यादा गनर-मनर होने वाली ठैरी। पार्टी वालों ने तभी तो मगनुवा को कमान सौंपी है। वह इलाके की नब्ज पहचानता है।

चुनाव ड्यूटी को लेकर प्रभुलाल बेचैन दिखाई दिये। पूछने पर बोले- 'बरसात के दिन हैं। ऊपर से सरकार आदेश। आज तक कई चुनाव निपटा दिये। बड़ी जिम्मेदारी का काम है।' दाज्यू, चुनाव प्रधान का हो या सांसद का, कार्मिकों की दौड़ और प्रचारकों की भागमभाग जरूरी है बल। निर्वाचन अधिकारी जानते हैं कि कार्मिकों को कस कर रखा जाएगा तो फटफट काम करेंगे। इसी तरह पार्टी वाले प्रचारकों को पहले से हुर्या देने वाले ठैरे ताकि वह हर तरह से कमर कसकर तैयार रहेंगे।

दाज्यू, हल्द्वानी नगर निगम की दुकान पर अतिक्रमण कर पाँच गुना क्षेत्रफल बढ़ा दिये जाने की शिकायत पर नगर निगम कार्रवाई कर रहा है। दाज्यू, ये कोई नई बात तो है नहीं। पालिका हो या नगर निगम इनकी दुकानों पर मनमानी का लम्बा इतिहास है। झप्पू लाला ने दुकान से लगे शौचालय को भी टाइल ट्यूब लगाकर सजा दिया था। सार्वजनिक मल-मूत्र का गढ़ बना गोदाम मिष्ठान भण्डार के रूप में प्रसिद्ध हो चुका है। दाज्यू, जब कृपा होती है तो मलबा भी सोने के भाव हो जाने वाला ठैरा। अपने पप्पन को चुनाव जीत जाने दो, फिर देखो.......। पटरी पार शहर में रहने वाला बलुरुवा भी चुनाव जीतने वालों को शिष्टाचार भेंट के बहाने शूटिंग कर लेता है बल। गजब की दुनिया में पंचायत चुनाव भी अजब हलचल हुए। हमारा मौनू दा भूतपूर्व प्रधान के रूप में इलाके का दादा है। चार डम्पर और दो टुकटुक का मालिक है वह। मन लगाने के लिये रेता-पत्थर चोरी का काम उसे अच्छा लगता है बल। भगवान जाने ये कौन सी समाजसेवा का हिस्सा है। कह रहा था- 'चोरी-चकारी के काम में चेले-चाटे कब्जे में रहते हैं। उनका भी जेब खर्च निकल जाता है। एक आवाज में सब तैनात हो जाते हैं।' दाज्यू, मौनू दा की बात दमदार लग रही है क्योंकि हमने तो भले लोगों को एकजुट होते कम ही देखा है।

दाज्यू, मुख्य सचिव ने निर्देश दिये हैं कि पात्र कर्मचारियों की अनिवार्य रूप पदोन्नति हो। प्रत्येक कर्मचारी की सेवा पुस्तिका अपडेट रहे। एसीआर याने वार्षिक गोपनीय प्रविष्टि लटकाने पर वह बहुत नाराज हैं। दाज्यू, सचिव साब तो ठीक ही कह रहे हैं लेकिन उनका क्या किया जाए जो भांग की गोली बने कार्यालय में समय बिता रहे हैं। दूसरी ओर मैडम बबली की धमकी कि सीआर में सब चौपट कर दूंगी। दाज्यू, आश्चर्य हो रहा है कि भात-लात-पाद का भूखा बलुरुवा पर मैडम ने फूल बरसाए हैं बल। भगवान जाने इससे क्या होगा। ऊपर वाले ने इन्हें चुन-चुन कर भेजा है इस धरती पर। जितना दाना-पानी है चुगने दो।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

नेता जी कहिन

जनता की जान जोखिम में डालने की कोशिश : यशपाल आर्य

नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने उत्तराखण्ड सरकार पर आरोप लगाया कि सरकार का त्रिस्तरीय चुनावों को सात महीने तक टालने के बाद अब मानसून में कराने का निर्णय प्रदेश की जनता की जान जोखिम में डालने जैसा है। श्री आर्य ने कहा कि इस समय प्रदेश में भारी बारिश के कारण नदियां और नाले उफान पर हैं और प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में भूस्खलन और बादल फटने की घटनाएं हुई हैं। जिससे मासान्य जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। कई सम्पर्क मार्ग मलबा और पत्थर गिरने से बाधित हो गए हैं। जबकि पुल तक नदी नालों में समा गए हैं। लोगों की परेशानियां बढ़ चुकी हैं, कई गाँवों का जिला मुख्यालय से सम्पर्क कट गया है। इन हालातों में पंचायत चुनावों के मामले में सरकार का निर्णय अपरिपक्वता साबित करता है। पहले चरण की बरसात में ही प्रदेश के हर इलाके का जन जीवन अस्त-व्यस्त हो गया आगे भी खतरा है।

2027 विधान सभा के चुनाव में हैट्रिक लगाएंगे : महेन्द्र भट्ट

भारतीय जनता पार्टी के लगातार दूसरी बार अध्यक्ष बने महेन्द्र भट्ट का कहना है कि भाजपा 2027 के विधानसभा चुनाव में हैट्रिक लगाएगी। उससे पहले पार्टी जिला पंचायतों में ही नहीं ग्राम पंचायतों और बीडीसी के पदों पर जीत दर्ज करेगी। सभी जिला पंचायत की सीटों पर जीतना कोई कठिन कार्य नहीं है। हमारा लक्ष्य इससे भी बढ़ा है।

श्री भट्ट ने पार्टी संगठन को दुनिया का सबसे मजबूत संगठन बताते हुए कहा कि भाजपा जो ठान लेती है उस निर्णय पर अमल होता है और उनका लक्ष्य ग्राम स्तर से लेकर देश के शीर्ष तक विकास का है। इसके परिणाम दिखाई दे रहे हैं, जनता को भी भरोसा जगा है। यही कारण है कि चुनावों में सफलता की हैट्रिक लगेगी।

आपदा में चुनाव अवसर तलाश रही भाजपा : सूर्यकान्त धस्माना

प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष सूर्यकान्त धस्माना ने आरोप लगाया है कि भाजपा अपदा में पंचायत चुनाव जीतने के अवसर तलाश रही है। प्रदेश में भारी बारिश के कारण आपदा जैसी स्थिति है। सम्पर्क मार्ग भूस्खलन से बन्द हैं और आफत मची है लेकिन भाजपा को मौका सूझ रहा है।

कांग्रेस भवन देहरादून में पत्रकारों से वार्ता करते हुए धस्माना ने कहा कि प्रदेश प्रदेश में भारी बारिश व आपदाओं के बीच पंचायत चुनाव कराना राज्य सरकार की अदूरदर्शी व लोकतन्त्र विरोधी मानसिकता को दर्शाता है। कहा राज्य में पंचायत चुनाव नवम्बर व दिसम्बर में सम्पन्न हो जाने चाहिये थे।

पनियाली से विमला तड़ागी

हल्द्वानी में जिला पंचायत क्षेत्र रामड़ी आनसिंह (पनियाली) से कांग्रेस ने विमला तड़ागी को मैदान में उतार कर माहौल जबर्दस्त बना दिया है। दो बार की प्रधान श्रीमती तड़ागी की क्षेत्र में जबर्दस्त पकड़ है।

देवलचौड़ बंदोबस्ती से किरन

हल्द्वानी की देवलचौड़ बन्दोबस्ती जिला पंचायत सीट पर भी सबका ध्यान है। इसमें कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कुन्दन सिंह नेगी की पत्नी श्रीमती किरन नेगी चुनाव मैदान में हैं। यहाँ भाजपा ने दमखम वाले परिवार की दीपा दरम्वाल को टिकट दिया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मानसून की यात्रा

केदारनाथ यात्रा के लिए नासूर बना स्लाइडिंग जोन

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

हर साल की तरह मानसून पहाड़ों में आफत लेकर आता है और मानसून का सबसे बुरा असर केदारनाथ धाम की यात्रा पर पड़ता है। मानसून सीजन में केदारनाथ धाम आने वाले यात्रियों की संख्या काफी कम हो जाती है जबकि पैदल यात्रा मार्ग समेत केदारनाथ हाईवे पर भी भूस्खलन होने से यात्रियों के साथ दुर्घटनाएं घट जाती हैं। केदारनाथ हाईवे के सोनप्रयाग-गौरीकुण्ड के बीच मुनकटिया और शटल सेवा वाहन के पास स्लाइडिंग जोन नासूर बन गया है।

यहाँ पर आए दिन पहाड़ी से भूस्खलन हो रहा है। इस कारण यात्रा बाधित होने के साथ ही तीर्थ यात्री भी फंस रहे हैं, जिससे यात्रियों को 6 किमी का अतिरिक्त सफर तय करना पड़ रहा है। इधर एसडीआरएफ के जवान तीर्थ यात्रियों के लिए देवदूत बन रहे हैं। जवान यात्रियों को कन्धों पर लादकर रास्ता पार करवा रहे हैं।

पिछली यादें को देखें तो पता चलता है 31 जुलाई 2024 की केदारघाटी आपदा में आई थी जिसमें सोनÇयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग का एक बड़ा हिस्सा सोनप्रयाग के पास मन्दाकिनी नदी में समा गया था। अब फिर यह जोन सक्रिय हो गया है और आए दिन यहाँ पर भूस्खलन हो रहा है। लगातार भूस्खलन होने से यात्रा प्रवाहित हो रही है और तीर्थ यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। एसडीआरएफ के जवान जान जोखिम में डालकर यहाँ पर यात्रियों का सफर रेस्क्यू कर रहे हैं और उन्हें सुरक्षित तरीके से रास्ता आर पार करवा रहे हैं। कई बार एसडीआरएफ के जवान बुजुर्ग महिला एवं बच्चों को कन्धों में लाद कर बड़े-बड़े बोल्डर के बीच अपनी जान को जोखिम में डालते हुए रास्ता आर पार करवा रहे हैं। रुद्रप्रयाग जिले में लगातार हो रही बारिश के चलते सोनप्रयाग शटल पुल और मुनकटिया के पास स्लाइडिंग जोन वाले क्षेत्र में लगातार मलबा-पत्थर आने से मार्ग यात्रियों की आवाजाही के लिए पूरी तरह से बाधित रहा। सम्बन्धित कार्यदायी संस्थाओं के स्तर से मार्ग को खोले जाने की कार्रवाई शुरू की गई लेकिन लगातार हो रही बारिश और ऊपर पहाड़ी से मलबा पत्थर गिरने के कारण इन दोनों जगहों पर मार्ग खोले जाने में दिक्कतें आईं।

मानसून सीजन आते ही केदारनाथ धाम आने वाले यात्रियों की संख्या में बेहद कमी आने लगी है। पहले जहाँ रोजाना 25 हजार से ज्यादा तीर्थ यात्री बाबा केदार के दर्शनों के लिए पहुँच रहे थे वहीं अब यात्रियों की संख्या करीब 10 से 11 हजार के बीच आ गई है। कुछ दिनों में यह आंकड़ा और भी कम हो जाएगा। अभी तक 12 लाख 82 हजार से ज्यादा यात्री बाबा केदार के दरबार में हाजिरी लगा चुके हैं। कुल मिलाकर कहें तो केदारनाथ धाम की यात्रा पर मानसून का असर साफ दिखाई देने लग गया है। हादसों की वजह से भी यात्रियों ने यहाँ आना फिलहाल बन्द कर दिया है। बारिश के कारण गौरीकुण्ड से केदारनाथ धाम तक का सम्पूर्ण पैदल मार्ग चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। लिहाजा प्रशासन ने केदारनाथ धाम आ रहे श्रद्धालुओं से अपील की है लेकिन यहाँ पर लगभग सौ मीटर ऊपर से भूस्खलन शुरू हो गया है, जो कि आने वाले समय में इस पूरे क्षेत्र के लिए मुसीबत का सबब बन सकता है। सरकार को इसका समाधान शीघ्र खोजना होगा, ताकि यहाँ पर भूस्खलन को रोका जा सके। इसका स्थाई समाधान जरूरी है, यदि यहाँ पर भूस्खलन को समय रहते नहीं रोका गया तो पूरे क्षेत्र के लिए नासूर बन जाएगा। भूस्खलन जोन नासूर बने हुए हैं। इसके चलते कई बार यात्रा भी बाधित हो रही। इस कारण तीर्थयात्रियों को सुरक्षित स्थानों पर शरण लेनी पड़ती है। पहाड़ के दरकने से स्लाड जोन बन गया।

हल्की सी बारिश में ही पहाड़ से भारी मलवा सड़क पर आ जाने से हर साल बदरीनाथधाम की यात्रा अक्सर बाधित होने लगी। लगभग 500 मीटर लम्बा यह जोन यात्रा के लिए नासूर बन गया। पिछले ढाई दशकों में इस स्थान पर खासकर बरसात के दिनों मे कई वाहनों के मलवे में दबने के साथ ही कई तीर्थयात्रियों की दर्दनाक मौत हो गई। करोड़ों खर्च होने पर भी इस समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा था। हालांकि एनएच की ओर से इनका उपाया सोचा जा रहा है। उम्मीद करते हैं सुरक्षा के उपाय पूरे होंगे।

हिमालय पर्वत श्रृंखला में क्यों ज्यादा होते हैं भूस्खलन

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड में मानसूनी कहर खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। प्रकृति अपने रौद्र रूप में है। कहह्न भूस्खलन तो कहीं बादल फटने की घटनाएं, तो कहीं गाँव-घरों में घुसता बरसाती नालों का मलबा व पानी ने मानव जीवन की कमर ही तोड़ दी है।

विशेषज्ञों की मानें तो धरातल पर सही तरीके से पानी की निकासी करना बहुत जरूरी है। मुख्यतौर पर यही अधिकतर भूस्खलन की घटनाओं का मुख्य कारण है। इसके अलावा बिना मिट्टी की जाँच के निर्माण करना भी भूस्खलन और जमीन धंसने का मुख्य कारण हो सकता है। जमीन धंसने और भूस्खलन का कारण पहाड़ियों में पड़ने वाली दरारें और जमीन के नीचे बहने वाला पानी मुख्य कारण है। इसके अलावा विभिन्न क्षेत्रों की मिट्टी भी अलग अलग होती है। यानी यहाँ 2 चट्टानों का जोरदार टकराव होता है। इस कारण यह क्षेत्र धंस रहा है। इसके अलावा एडवांस स्टडी की पहाड़ी में बीते वर्ष और इस वर्ष भूस्खलन देखने को मिला। यह भूस्खलन चट्टानों पर भार पड़ने के कारण हुआ है। यहाँ भी चट्टानों में दरारें थी और पानी इन दरारों में रिसने के कारण भूस्खलन हुआ। भूस्खलन की घटनाओं से बचने के लिए सतह पर पानी को सही तरीके से निर्यात्रित करना जरूरी है। पानी को सही दिशा में बहने देना चाहिए। ताकि जमीन के अन्दर नमी न बने और मानसून के दौरान ऐसे क्षेत्र कमजोर न हो। कुछ वर्षों में भूस्खलन की घटनाएं अधिक देखने को मिल रही है। अनियमित बारिश और भारी वर्षा से जमीन जल्दी सैचुरेट यानी पूरी तरह से गीली हो रही है। पहाड़ों में चट्टानें टूटती रहती हैं। बारिश का पानी इन दरारों में घुस जाता है जिससे भूस्खलन की सम्भावना बढ़ जाती है।

भूस्खलन का मुख्य कारण पानी है, इसे सही दिशा में बहने देना बहुत जरूरी है। सतह के पानी को निर्यात्रित करना बहुत ज़रूरी है ताकि जमीन में ज्यादा नमी न बने और भूस्खलन की सम्भावना कम हो सके। हिमालय के पहाड़ अभी अपनी शैशव अवस्था में हैं। इन्हें कचरे और मलबे का ढेर भी कहा जा सकता है। जोशीमठ, मसूरी, गंगटोक, जम्मू, नैनीताल, भीमताल जैसे तमाम हिमालयी हिल स्टेशस में भूस्खलन व जमीन धंसने की समस्या आम है। आजाद भारत में हिल स्टेशस पर किए गए ज्यादातर नए निर्माण में सीमेंट और कंक्रीट का भारी मात्रा में इस्तेमाल किया गया। अगर पहाड़ों को बचाना है तो सरकार को भारी निर्माण कार्यों पर तुरन्त रोक लगानी चाहिए। पहाड़ों की सैर करने आने वाले सैलानियों को रोकना बेशक मुश्किल है लेकिन उन्हें समझना होगा कि वे यात्रा के दौरान कम से कम सुविधाओं में अपना काम चलाएं। पर्यटकों की मांग को पूरा करने के लिए भारी निर्माण नहीं किया जाए तो काफी हद तक पहाड़ों पर दबाव कम हो सकता है। इसके अलावा ये भी जरूरी है कि पहाड़ों की तलहटी के तराई क्षेत्रों के जंगलों को काटने से परहेज किया जाए। हालांकि यह सुनने में बेहद अजीब लगेगा, लेकिन आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी, यदि आपसे ये कहा जाए कि पहाड़ों पर या हिमालय में निरन्तर होने वाले भूस्खलन न होते, तो यहां पर मानव सभ्यताएं भी विकसित नहीं हो पाती या फिर यह जो मानव सभ्यता, खास तौर से जो उच्च हिमालय क्षेत्र में सदियों से फलती फूलती आ रही है, बिना लैंडलाइन के यहाँ की जीवन शैली इतनी समृद्ध नहीं बन पाती। ऐसा कैसे जो भूस्खलन अक्सर लोगों की जान ले रहा है, वो कैसे जीवन को यहाँ आसान बनाते आए हैं। पहाड़ों पर होने वाले जानलेवा लैंडस्लाइडों का एक और अनकहा और अनसुना पहलू भी मौजूद है। दरअसल भूस्खलन लैंडफॉर्म मोडिफाइंग प्रक्रिया की एक बेहद खूबसूरत और पावरफुल घटना है। जब से हिमालय के पहाड़ बने हैं, निरन्तर यह प्रक्रिया जारी है। हम, आप और सरकारें चाहे जितना चाहें, लेकिन इन भूस्खलनों पर नियंत्रण लगाना असम्भव है। ऐसा इसलिए क्योंकि यह प्रकृति के गुरुत्वाकर्षण के नियम के खिलाफ होगा। क्योंकि धरती पर जो भी वस्तु हाई एनजर्द स्टेट में है, उसका नीचे आना तय है। वह आज नहीं तो कल नीचे जरूर आएगी। इसी तरह से उत्तराखण्ड में जब तक पहाड़ हैं, भूस्खलन की प्रक्रिया जारी रहेगी।

उत्तराखंड के पहाड़ों में खूब पानी बरसता है लेकिन यह पानी बह कर नीचे चला जाता है। मैदान की तरह यहाँ पर भूमिगत जल भी उपलब्ध नहीं हो पाता है। लेकिन लैंडस्लाइड वाली जगह इस पानी को रोक कर रखती है। यह पानी स्रोत के जरिए उपलब्ध होता है। इसी तरह से खेती के लिए पुराने भूस्खलन वाली जगह पर खेती करना आसान होता है। क्योंकि वहाँ पर सॉइल फॉर्मेशन बिल्कुल नया होता है इसलिए वह भूमि भी बेहद उपजाऊ होती है। सैकड़ों साल पहले जब हिमालय में मानवीय सभ्यता विकसित हुई तो उस समय लोगों ने पहाड़ों को समझा। प्रकृति को समझा और उसके हिसाब से यहाँ पर मानवीय जीवन फला फूला। इसीलिए पुरानी बसावटें सीधे-सीधे लैंडस्लाइड के ऊपर ना विकसित करके पुराने और बड़े लैंडस्लाइड के नजदीक ऊँचाई वाली जगह पर विकसित की गई। इसके उदाहरण आज उत्तराखण्ड में कई जगहों पर देखने को मिलते हैं। यहाँ सभी पुराने पारम्परिक गाँव इन बातों का विशेष ध्यान करके बसाए जाते थे. हालांकि ये लोग पानी और खेती के लिए फिर भी नीचे लैंडस्लाइड वाली जगह पर निर्भर रहते थे.

ज्योतिष की बातें- 237

16 जुलाग्र 2025 को सूर्य मिथुन राशि से निकलकर मित्रराशि कर्क में प्रवेश करेंगे इस समय सूर्य पर कोई शुभाशुभ दृष्टि भी नहीं है अपितु बुध से युति रहेगी। अत: इस समय सूर्य बली रहेगा। फलदीपिका के अनुसार चन्द्रमा से 3, 6 10 व 11 वां स्थान सूर्य के शुभ होता है। सूर्य मुख्य रूप से आत्मबल, शद्रि, स्फूर्ति, आरोग्य, सफलता, सम्मान, धनलाभ, निर्भयता, इच्छाशक्ति, पिता, यश, कीर्ति, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, प्रशासन क्षमता पदोन्नति, आदि का कारक होता है। इन्हीं विषयों में सूर्य का शुभाशुभ फल प्राप्त होता है। अत: अगला एक माह वृषभ, कुम्भ, तुला व कन्या राशि के जातकों के लिए अत्यन्त शुभ होगा। शेष राशि वाले व्यक्तियों के लिए सामान्य फल रहेगा।

यह नितान्त स्थूल फल है, सूक्ष्म फलादेश व्यक्ति की जन्मकुण्डली महादशा आदि पर निर्भर करता है।

18 जुलाग्र 2025 को बुध कर्क राशि में वक्री हो जाएगा अत: अगले 24 दिन बुध के द्वारा प्राप्त राशियों के अनुसार शुभाशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 127

वर्गवाद की वास्तविकता

जब भी किसी दम्पत्ति में लड़ाई होती है तो महिलाएं समझती हैं कि औरत की ही गलती होगी और पुरुष समझते हैं कि आदमी की गलती होगी जबकि वास्तविकता दोनों ही नहीं समझते। अपने पूर्वाग्रह के कारण ऐसा कहते हैं। लोग समझते हैं जब मेरी जाति का आदमी प्रधानमन्त्री बनेगा तो मेरी जाति की तरक्की हो जाएगी, ऐसा नहीं होता है। ब्राह्मण यदि सोचते हैं कि ब्राह्मण प्रधानमन्त्री बनेगा तो ब्राह्मणों का भला होगा, ऐसा नहीं होता है। यदि औरतें यह सोचती हैं कि कोई औरत प्रधानमन्त्री बन जाएगी तो औरतों का भला होगा, ऐसा भी नहीं हो सकता, बल्कि औरतों पर अत्याचार बढ़ सकते हैं। मुसलमान यदि सोचें कि मुसलमान प्रधानमन्त्री हो जाने पर मुसलमानों का भला हो जाएगा तो ऐसा भी नहीं हो सकता। यदि हिन्दू ऐसा सोचते हैं कटर हिन्दू प्रधानमन्त्री बनने पर हिन्दुओं के हित में कार्य होगा, ऐसा तो कभी हो ही नहीं सकता। यदि कोई संस्कृत प्रेमी यह सोचे कि कोई संस्कृत भाषा को जानने वाला संस्कृत प्रेमी व्यक्ति प्रधानमन्त्री बनेगा तो संस्कृत भाषा राष्ट्रभाषा बन जाएगी ऐसा भी कभी नहीं हो सकता। यदि कोई गरीब आदमी गरीबी के आधार पर प्रधानमन्त्री बन जाता है तो वह भी गरीबों का भला नहीं करेगा। आदि आदि।

यह एक मूल सिद्धान्त है कि जब कोई व्यक्ति किसी वर्ग विशेष के कारण पद प्राप्त करता है तो वह उस वर्ग विशेष की हानि करता है। जैसे, यदि कोई शूद्र होने के कारण प्रधानमन्त्री बना है तो शूद्रों को ही हानि पहुँचाएगा।

सर्व समावेशी प्रवृत्ति का व्यक्ति ही पद प्राप्त करने पर सभी को लाभ पहुँचता है। यह सिद्धान्त है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

कांवड़ मार्ग पर दुकान लाइसेंस-नाम जरूरी

हरिद्वार। प्रदेश सरकार ने कांवड़ यात्रा पर निगरानी शुरू कर दी है। इसके लिये निर्देश दिये गये हैं कि खानपान की दुकानों ढाबे, ठेली, फड़, प्रतिष्ठानों पर दुकान लाइसेंस व पंजीकरण प्रमाण पत्र प्रमुख स्थान पर प्रदर्शित करना अनिवार्य होगा। रेस्टोरेंट व भोजनालयों को 'फूड सेफ्टी डिस्प्ले बोर्ड' भी लगाना होगा।

स्वच्छता को लेकर गंगोलीहाट में ज्ञापन

गंगोलीहाट। बरसात के मौसम में चोक नालियों को खुलवाने व स्वच्छता को लेकर कांग्रेस ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। यूथ कांग्रेस अध्यक्ष आनन्द सिंह बिष्ट के नेतृत्व में शिष्टमण्डल ने ज्ञापन सौंपते हुए सड़कों में बह रहे गन्दे पानी का मुद्दा उठाया। यहाँ मनोज टम्टा, पवन बोरा, प्रमोद कुमार भी थे।

सीतावनी, बिजरानी जोन बन्द

रामनगर। कार्बेट टाइगर रिजर्व का बिजरानी और रामनगर वन प्रभाग का सीतावनी जोन व भण्डारपानी का जोन जंगल सफारी के लिये बन्द हो गया है। सीटीआर का सर्वाधिक लोकप्रिय ढिकाला और दुर्गादेवी गेट पहले ही यानी 15 जून को बन्द हो गया था।

निर्विरोध प्रधान आईजी गुंज्याल शानदार पहल

उत्तराखण्ड पुलिस में आईजी से सेवानिवृत्त बिमला गुंज्याल ने शानदार पहल करते हुए अपने ग्राम गुंजी में जाना स्वीकार किया। ग्रामीणों ने उन्हें निर्विरोध प्रधान के रूप में मार्गदर्शन को कहा है।

मदकोट सीट पर भावना दानू का दांव

मदकोट। जिला पंचायत की मदकोट सीट पर कांग्रेस समर्थित भावना दानू का दांव चुनाव को रोचक मोड़ दे चुका है। सामाजिक कार्यकर्ता विक्रम दानू की लगातार पकड़ का असर इनके पक्ष में दिखाई दे रहा है।

गोकर्ण जंगपांगी के नाम से हलचल

मदकोट। डॉ. गोकर्ण सिंह जंगपांगी के क्षेत्र पंचायत सदस्य के लिये चुनाव मैदान में कूदने की सूचना से काफी हलचल है। शुरू से ही सामाजिक कार्यों में सक्रिय जंगपांगी की तमाम ग्रामों में खासी पकड़ है। चुनाव का पूरा परिदृश्य क्या होगा वह तो बाद में पता चलेगा लेकिन विधायक हरीश धामी के रुख का असर भी देखने को मिलता है।

पंकज सिंह वृजवाल सबकी चाहत

मुनस्यारी। दुम्मर क्षेत्र से निवर्तमान प्रधान पंकज सिंह वृजवाल सबकी चाहत रहे हैं। इनका पूरा परिवार सामाजिक कार्यों में अग्रणीय रहा है।

मूसलाधार बरसात और भूस्खलन से आफत

कोटद्वार-नजीबाबाद मार्ग पर पुलिया टूटने से परेशानी

तवाघाट में मलबा आने से तीन घाटियां अलग-थलग

उत्तरकाशी में बादल फटने की घटना और मलबा भरा

शेरनाला उफनाने से हल्द्वानी-सितारगंज मार्ग में जाम

भूधंसाव से क्वारब अति सम्वेदनशील बना हुआ है

देवीधुरा-बसानी, बजून-अधौड़ा मार्ग मलबे से पटा

रसियाबगड़ को जोड़ने वाला पुल रामगंगा में समाया

मूसलाधार बरसात और भूस्खलन से उत्तराखण्ड में आफत मची हुई है। जगह-जगह नदी-नालों के उफनाने, पुल-पुलिया-मार्ग टूटने, भूस्खलन से जन-जीवन अस्त-व्यस्त है। भारी बारिश से चारधाम यात्रा में श्रद्धालुओं की संख्या में कमी आई है। हेमकुण्ड साहिब जाने वालों का रुख भी कम हुआ है।

भारी बरसात से कोटद्वार-नजीबाबाद मार्ग पर जाफराबाद पुलिस चौकी के पास पुलिया टूटने से आवागमन की दिक्कत है। सुखरो पुल और जाफराबाद की पुलिया टूटने से गढ़वाल की यात्रा में बाधा है। यहाँ खैरा ढाबा क्षेत्र में एक निर्माणाधीन पुल के नीचे वैकल्पिक मार्ग था, वह भी बह गया। इस हालत में कोटद्वार से लेकर दिल्ली तक सैकड़ों वाहन फंस गये। प्रशासन ने यातायात डायवर्ट कर गाड़ियों को हरिद्वार, देहरादून मेरठ व दिल्ली की ओर वैकल्पिक मार्गों से भेजा। ऋषिकेष-यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग लगातार तीन दिन तक न खुलने से आफत मच गई। मार्ग में अभी भी मलबा गिर रहा है।

उत्तरकाशी में बादल फटने की घटना के अलावा मलबा भर जाने से भारी नुकसान हुआ है। सिलाई बैंड में बादल फटने की घटना के बाद से लोग अभी तक सहमे हैं। मजदूरों के टीनसेट कमरों में पानी मलबा आने लगा तो किसी तरह वह लोग जान बचाकर भागे थे। क्षतिग्रस्त यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग को बहाल करने के लिये युद्ध स्तर पर कार्य भी करवाया जा रहा है। श्रद्धालुओं को ओजरी से सिलाई बैंड तक पैदल मार्ग से वहाँ से ट्रांसशिपमेंट व्यवस्था के माध्यम से सुरक्षित रूप से उनके गंतव्य तक पहुँचाया जा रहा है।

सीमान्त क्षेत्र में बारिश हमला बनकर आई है। तवाघाट में मलबा और बोल्डर आने से व्यास, चौदास और दारमा घाटी का सम्पर्क कट चुका है। आदि कैलास मार्ग सहित तमाम मार्गों पर मलबा आने से दिक्कत है। मुनस्यारी-मिलम को जोड़ने वाली सड़क बरसात में आफत बन चुकी है। बोल्डर मलबा आने से आवाजाही बाधित है। रलगाड़ी के पास पहाड़ दरकने से खतरा है।

भवाली-अल्मोड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग पर क्वारब अति सम्वेदनशील बना हुआ है। यहाँ 200 मीटर सड़क कीचड़ से बदहाल है और भूधंसाव के कारण काफी जाम लग रहा है। भीमताल की ग्राम पंचायत पाण्डेगांव के तोक भांकर में भूस्खलन से 12 परिवार खतरे में हैं। ग्रामीणों ने प्रशासन से सुरक्षित जगह विस्थापन की मांग की है। पटवारी ने क्षेत्र का निरीक्षण किया है।

हल्द्वानी-चोरगलिया-सितारगंज हाईवे पर बार-बार जाम की स्थिति बन रही है। पहाड़ में बरसात के पानी के आने से शेरनाला उफनाने के कारण बहुत ही खतरनाक बाढ़ की स्थिति दिखाई दे रही है। ऐसे में हाईवे पर यातायात रोका जा रहा है ताकि कोई अनहोनी न हो। नैनीताल शहर के चार्टन लॉज क्षेत्र सम्वेदन शील बना हुआ है और उसे भूस्खलन रोकने के लिये तिरपाल लगाया गया है। बताते चलें कि सितम्बर 2023 में भूस्खलन के बाद से यहाँ खतरनाक बना हुआ है। रामनगर में कोसी का जलस्तर उफान पर है। क्षेत्र को पहाड़ से से जोड़ने वाले ध नगढ़ी नाले के भयंकर बहाव के कारण यातायात रोकना पड़ रहा है।

चम्पावत जिले मूसलाधार बारिश का प्रभाव है। देवीधुरा-बसानी और बजून-अधौड़ा मार्ग मलबे से पटा हुआ है। जेसीबी से लगातार मलबा हटाकर मार्ग खोला जा रहा है लेकिन बार-बार मलबा आने से खतरा है।

बरसात की आफत बागेश्वर जिले में कम नहीं है। कालापैरकापड़ी को पिथौरागढ़ के रसियाबगड़ गाँव से जोड़ने वाला पुल रामगंगा नदी में समा गया है। सात साल पहले बनकर तैयार हुआ यह पुल पिछले साल क्षतिग्रस्त हो गया था। विभाग इस पुल की मरम्मत का कार्य कर रहा था।

रिलकोट में गोरीगंगा के कटाव से आफत

मल्ला जोहार विकास समिति ने शासन-प्रशासन से सुरक्षा की मांग दोहराई

मुनस्यारी। सीमान्त का वाइब्रेंट विलेज रिलकोट अपने माइग्रेशन व्यवस्था और खुशहाली के लिये चर्चित रहा है लेकिन जिस प्रकार गोरीगंगा के उफान से इसकी भूमि का कटान हुआ है, वह खतरे के रूप में दिखाई दे रहा है। खेतीबाड़ी कर अपनी मातृभूमि के लिये संघर्ष करने वाले ग्रामीण इस बात को लेकर चिन्तित हैं कि इस इस दूरस्थ ग्राम का क्या होगा। इसी सवाल को लेकर मल्ला जोहार विकास समिति ने शासन प्रशासन से सुरक्षा की मांग दोहराई है। कहा है कि इसी गाँव में भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल का बैस कैम्प स्थापित है। अभी 30 जून को जो जो ट्राली खिंचाच ग्राम में सम्पर्क हेतु स्थापित थी, उसकी रस्सी टूटने से चार लोग नदी में बह गए, किस्मत से वह बच गए। जिसमें तीन को गम्भीर चोट आई। इस बड़ी घटना के बाद तो शासन-प्रशासन को जाग जाना चाहिये।

समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि प्रदेश के मुखिया भी हमारे क्षेत्र से अनभिज्ञ हैं। सांसद विधायक लोग भ्रमण करने लिये आते नहीं। झूला पुल निर्माण हेतु लगातार प्रयास करने के उपरान्त भी कुछ नहीं किया गया जबकि दो साल पहले इसकी स्वीकृति मिल चुकी है। उन्होंने मांग की है कि ग्राम को बचाने लिये चैकडैम का निर्माण हो और यातायात के लिये उचित प्रबन्ध किया जाए। इससे आस-पास के ग्रामों का भी बचाव होगा।

71करोड़ से जगमग होंगे सीमान्त ग्राम

रुद्रपुर। चीन सीमा से लगे सीमान्त के 52 ग्राम 71.5 करोड़ रुपये से जगमग होंगे। उच्च हिमालय क्षेत्र की दारमा, व्यास और जोहार घाटी के गाँवों के लिये विद्युतीकरण मद में यह स्वीकृति हुई है। यूपीसीएल के रुद्रपुर जोन में शामिल दारमा के 20, व्यास के 18 और जोहार के 14 गाँव अब तक विद्युतीकरण से वंचित हैं। सौरऊर्जा पर निर्भर ग्रामीणों को अब विद्युतीकरण से लाभ होगा।

यूपीसीएल रुद्रपुर जोन के मुख्य अभियन्ता नरेन्द्र टोलिया ने बताया है कि दारमा में विद्युतीकरण के लिये 23 करोड़, व्यास में 87 करोड़ और जोहार में 21.5 करोड़ रुपये स्वीकृत हुए हैं। टेण्डर प्रक्रिया सम्पन्न हो चुकी है। जल्द ही कार्य शुरू हो जायेगा, जिसे डेढ़ साल की अवधि में पूरा करना लक्ष्य है।

कपकोट व थराली में उपजिला चिकित्सालय

प्रदेश सरकार ने बागेश्वर जिले के कपकोट और चमोली जिले के थराली को उपजिला चिकित्सालय की सौगात दी है। इन दोनों स्थानो पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों का उच्चीकरण कर उप जिला चिकित्सालय बनाने के लिये सरकार ने मंजूरी दे दी है।

सरकार ने प्रदेश में चिकित्सा तन्त्र को मजबूत करने की दिशा में यह कदम उठाया है। प्राथमिक व सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों को उच्चीकृत कर उन्हें सुविधा सम्पन्न बनाया जा रहा है। सरकार ने चिकित्सा इकाईयों के सुदृढ़ीकरण एवं विस्तारीकरण के तहत जनसंख्या मानकों में छूट देते हुए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कपकोट और थराली के उच्चीकरण को मंजूरी दी। इससे स्थानीय लोगों को उपचार के लिये दूसरे अस्पतालों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। कपकोट में उपजिला चिकित्सालय बने से पिथौरागढ़ जिले के सीमावर्ती गाँवों को भी उसका लाभ मिलेगा। इसके अलावा थराली सीएचसी को उप जिला चिकित्सालय उच्चीकरण कर कुलसारी में स्थापित करने का लाभी थराली, देवाल व नारायणबगड़ विकास खण्ड के लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं मिल पाएंगी।

परिक्रमा

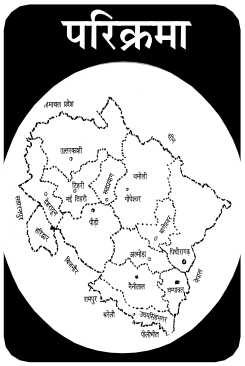

निजी बाइक भी टैक्सी सेवा में चलेंगी

देहरादून। अपने निजी वाहन को टैक्सी सेवा में चलाया जा सकेगा। केन्द्र सरकार ने मोटर वाहन एग्रीगेटर नीति 2025 जारी की है, जो उत्तराखण्ड में लागू होगी। इसके तहत सवारियों व ड्राइवरों के हित में कई बदलावा किए गए हैं। शिकायत व निगरानी प्रणाली को भी मजबूत बनाया गया है। यात्रियों को एग्रीगेटर की ओर से 5 लाख का बीमा लाभ सुनिश्चित करना होगा। यात्रियों की सुरक्षा के लिये मोबाइल एप तंत्र विकसित करना होगा।

50 मीटर दायरे में फोटोग्राफी पर रोक

चमोली। बदरीनाथ मन्दिर सिंहद्वार के सामने फोटो खिंचवाने को लेकर हुए विवाद को बदरीकेदार मन्दिर समिति ने गम्भीरता से लेते हुए बदरीनाथ और केदारनाथ मन्दिर के 50 मीटर दायरे में फोटो खींचना और वीडियो बनाना प्रतिबन्धित किया है। समिति के अध्यक्ष ने पुलिस प्रशासन से निर्धारित दूरी पर फोटो वीडियो जैसे प्रकरण रोकने को व्यवस्था बनाने को कहा है। असल में मन्दिर द्वारा पर फोटो खिंचवाने को लेकर हाथापाई की घटना हुई थी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आचार्य द्रोण को.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

अवसर धृतराष्ट्र की राजसभा में कुरु कुलबधू द्रौपदी को बालों से खींचकर लाए जाने और फिर उसके वस्त्र-हरण का दुश्शासन द्वारा प्रयास करने का है। जैसे इस मौके पर विदुर के अलावा शेष सभी चुप रहे, धृतराष्ट्र चुप रहे, भीष्म चुप रहे, वैसे ही द्रोण भी चुप रहे। तो सवाल है कि क्यों उन्हीं की चुप्पी को कुछ ज्यादा नकारात्मक मान कर चला जाए? द्रौपदी ने जब विलाप करते हुए कहा कि इस सभा में भीष्म और द्रोण जैसे लोग भी निस्सत्व हो गए हैं(द्रोणस्य भीष्मस्य च नास्ति सत्वम्-सभा पर्व 67,41) और उसने सवाल पूछा कि 'क्या मैं धर्मपूर्वक जीती गई हूँ? तो अपनी विवशता, असमर्थता और न सोच पाने की विवेकशून्यता को भीष्म ने कुछ हद तक फिर भी स्वीकार किया (हालाँकि यह स्वीकार भी बेमतलब था) पर द्रोण का मुँह तक नहीं खुला। क्या कौरवों और पाण्डवों के गुरु और आचार्य होने के नाते उन्हें बोलना नहीं चाहिए था? क्या उन्हें कुछ करना नहीं चाहिए था? पर द्रोण चुप रहे, कुछ करना तो दूर। तो क्या इसे उनके वैसे ही उत्साहभंजक चरित्र का एक और नकारात्मक पहलू नहीं माना जाए?

पर अभिमन्यु वध? द्रोण के नेतृत्व में छह-सात महारथियों द्वारा पहले अकेला कर और फिर निहत्था कर मारने का दारुण कर्म? कैसे इनके लिए द्रोण को माफी दे दी जाए? जब इस कथित धर्म यद्ध में दोनों पक्ष और सभी महारथी अधर्म और धोखे से भी अपने शत्रु को मार गिराने में कोई संकोच नहीं कर रहे थे, तब द्रोण से यह अपेक्षा करना कि वे धर्म और मर्यादा की स्थापना करते, कुछ ज्यादती मानी जा सकती है।

पर सवाल है कि अगर अनैतिकता के इस झंझावत में गुरु पद पर प्रतिष्ठित लोग भी अपने आपको नहीं बचा सके तो कैसे उन्हें बड़प्पन का ऊँचा आसन दे दें? कैसे उन्हें भारत की सभ्यता के विकास में योगदान करने वाला एक नायक मान लें?

यानी द्रोण के चरित्र में, आयुधजीवी महान योद्धा होने के अतिरिक्त ऐसा कुछ नहीं है, जो उन्हें महान सिद्ध कर सके। द्रोण के चरित्र में शस्त्र है, शास्त्र नहीं है, बल है, बुद्धि नहीं है, शौर्य है, विचार नहीं है, प्रतिशोध का भाव है, उदात्त जीवनशैली नहीं है, बाल्यकाल की निर्धनता से उपजी समृद्धि की ललक है, पर मार्यादा का सम्वेदनशील बोध नहीं है। इसलिए कौरव-पाण्डवों के रूप में जो शिष्य द्रोण ने तैयार किए, उनके पास शस्त्र है, बल है, शौर्य है, प्रतिशोध का भाव है, पर युधिष्ठिर के अलावा किसी के पास शास्त्र नहीं है, बुद्धि का वैभव नहीं है, विचार की ताकत नहीं है और कोई उदात्त जीवन दर्शन भी इसीलिए नहीं है यानी जैसे गुरु वे थे, वैसे शिष्य उन्होंने बनाए, जो राज्य पाने की अन्धी लालसा में आपस में लड़ मरे और लड़कर मरने के इस नरमेध में द्रोण ने पुरोहिती की तो क्या इससे बड़ी नकारात्मक टिप्पणी द्रोण के चरित्र पर हो सकती है?

महाभारतकार द्रोण के इस चरित्र पर कितना खफा है, इसे जानना हो तो द्रोणपर्व के अध्याय 190 के नौ श्लोक (32-40) पढ़ जाइए, जहाँ द्रोण को साफ-साफ पापी कह दिया गया है। जब अश्वत्थामा के मारे जाने की (झूठी) खबर युधिष्ठिर के मुँह से सुनकर भी द्रोण ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार कि (कि पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार सुनते ही मैं शस्त्र त्याग दूँगा) शस्त्रों का त्याग नहीं कियाऔर रणभूमि में मारकाट मचाते रहे तो जानते हैं क्या हुआ? महाभारतकार ने यहाँ एक अनूठी कल्पना कर दी है कि अग्निदेव के नेतृत्व में विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, वशिष्ठ और अत्रि कुछ अन्य सूक्ष्म ऋषियों के साथ वहाँ आए और द्रोण से कहने लगे कि 'तुमने अब तक अधर्म से युद्ध किया है, तुम तो वेद-वेदांग जानते थे, फिर भी तुमने क्रूर कर्म किया है, ब्रह्मास्त्र न जानने वालों को भी ब्रह्मास्त्र से जला देने का पाप तुमने किया है, इसलिए तुम अब शस्त्र छोड़ो और अधिक पपिष्ठ मत बनो और मृत्यु का वरण करो।'

क्या इससे ज्यादा प्रताड़ना द्रोण की हो सकती थी? युद्ध में अधर्म और पाप कर्म तो और भी कईयों ने किए थे। फिर क्यों सिर्फ द्रोण को ही अधर्मी और पापी कहने का मौका महाभारतकार ने निकाल लिया? क्या शायद इसलिए कि गुरु और आचार्य होने के नाते द्रोण से अधिक श्रेष्ठतर अपेक्षाएँ थी, जो उन्होंने पूरी नहीं कीं?

यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि द्रोण की इस महती प्रताड़ना के बावजूद क्यों उन्हें इस देश के जनमानस में इतना महत्वपूर्ण स्थान मिल गया? हमारी स्मृतियों में द्रोण कोई घटिया और तिरस्कृत प्राणी के रूप में तो अंकित नहीं है, बल्कि उनके जन्म को गरिमापूर्ण बनाने का प्रयास ही पुराण/कथाओं में हुआ है। उनके शौर्य और पराक्रम का गुणगान ही सर्वत्र हुआ है। वे परशुराम का शिष्यत्व प्राप्त कर सके, यह गौरव भी उन्हें प्रदान किया गया। कोई बड़ा, श्रेष्ठ, आदर्श, मर्यादास्थापक काम न करने के बावजूद बल्कि अपने चरित्र के (ऊपर गिनाए) इतने सारे नकारात्मक पहलुओं के बावजूद द्रोण को अगर इतना सम्मान हमारी परम्परा में मिला है तो इसका कारण उनका गुरु होना है और ठीक इसी नाते वे गुरु को दिया जाने वाला सारा सम्मान बटोर कर ले गए हैं। वे गुरु के ऊँचे आदर्शपूर्ण आसन तक नहीं पहुँच पाए। बल्कि जैसे वे खुद थे, वैसे ही ही शिष्य उन्होंने बनाए, पर द्रोण दुश्चरित्र नहीं थे, जितेन्द्रिय थे और धर्म जानते थे, इसलिए हर नकारात्मक पहलू और महाभारतकार से मिली प्रताड़ना के बावजूद वे सिर्फ गुरु होने के नाते वहाँ पहुँच गए, जहाँ वे हमारे मानस में आज भी विराजमान हैं।

(साभार नवभारत टाइम्स)

राज्यपाल ने किया प्रो. अतुल जोशी व प्रो.सावित्री कैड़ा की पुस्तकों का विमोचन

नैनीताल। राज्यपाल व कुमाऊँ विश्व विद्यालय के कुलाधिपति लेफ्टि.जनरल गुरमीत सिंह (सेनि) ने राजभवन नैनीताल में कुविवि वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो. अतुल जोशी की पुस्तक 'कुमाऊँ विश्वविद्यालय का इतिहास एवं विकास' और इतिहास विभाग की प्रो. सावित्री कैड़ा जन्तवाल की पुस्तक 'स्वातंत्र्योत्तर उत्तराखण्ड में महिलाओं की भूमिका' (उत्तराखण्ड आन्दोलन के विशेष सन्दर्भ में) का विमोचन किया।

राज्यपाल ने कहा कि पुस्तकें किसी भी संस्था की आत्मा होती हैं। वे केवल घटनाओं का संकलन नहीं बल्कि विचारों, मूल्यों और भावनाओं की जीवन्त ऊर्जा होती हैं।

देवकी महरा को चतुर्थ मथुरादत्त मठपाल स्मृति साहित्य सम्मान

हल्द्वानी। कुमाउंनी कवयित्री देवकी महरा को चतुर्थ मथुरादत्त मठपाल स्मृति साहित्य सम्मान प्रदान किया गया। साहित्य अकादमी प्राप्त कुमाउंनी के वरिष्ठ साहित्यकार स्व. मठपाल की याद में चार वर्षों से कुमाउंनी भाषा, साहित्य में काम करने वाले साहित्यकारों को यह साहित्य सम्मान दिया जाता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता लोक गायिका बीना तिवारी ने की। इस अवसर पर दुदबोली के नवीनतम अंक का विमोचन भी किया गया। संचालन चारु तिवारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्रीमती नन्दिनी मठपाल, प्रभात उप्रेती, जगदीश जोशी, दयाल पाण्डे, नवेन्दु मठपाल, निखिलेश उपाध्याय, दामोदर जोशी, रिस्की पाठक, हेम पन्त, नरेन्द्र बंगारी, दिनेश कर्नाटक, गणेश मर्तोलिया, कमल मेहरा, राजेन्द्र सिंह महरा आदि मौजूद थे।

निर्विरोध दीपक खेतवाल

बागेश्वर। दीपक खेतवाल को निर्विरोध प्रधान चयनित होने पर ग्रामवासियों ने एक-दूसरे को बधाई दी है। दीपक छात्र जीवन से ही सामाजिक कार्यों में बेहतरीन भूमिका में रहे हैं।

पनियाली, नाई, हल्सों में प्रधान

नैनीताल। ओखलकाण्डा ब्लाक की ग्राम सभा नाई में ग्रामीणों ने बैठक कर सर्वसम्मत्ति से हिम्मत सिंह नयाल को निर्विरोध प्रधान का ऐलान किया। धारी ब्लाक की ग्राम पंचायत पनियाली में ग्रामीणों ने बैठक कर लीलाधर को ग्राम प्रधान बनाने का ऐलान कर दिया। इसी प्रकार बेतालघाट ब्लाक की ग्राम पंचायत हल्सों में संजय सिंह कैड़ा को प्रधान बनाने पर सहमति बनी।

कठाड़ कमैला से पारस महर निर्विरोध

चम्पावत। ग्राम पंचायत कठाड़ कमैला के ग्राम वासियों ने पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष पारस महर को निर्विरोध ग्राम प्रधान चुना है। महर ने ग्राम के हित के लिये हमेशा अग्रणीय रहने की बात कही।

लक्ष्मी जेठा को मुखिया बनाया

मुनस्यारी। दूरस्थ चौना ग्राम सभा में ग्राम वासियों ने एकता-भाईचारा बनाते हुए लक्ष्मी जेठा का सर्वसम्मति से मुखिया के रूप में चयन किया। इससे पूर्व भी गणेश जेठा का चयन निर्विरोध किया था। क्षेत्र वासियों के निर्णय पर लक्ष्मी जेठा ने कहा कि वह इलाके के विकास के लिये हमेशा अग्रणीय रहेंगी।

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न. 8958525979, 9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बिल्जू कप का पाँचवा संस्करण तरंगित कर गया

विजेता टीम को बिल्जू क्लब की ओर से चमचमाता कप के साथ 20000/- उपविजेता टीम को कप 10000/- का पुरस्कार

मुनस्यारी। बिल्जू कप का पाँचवा संस्करण फिर से तरंगित कर गया है। दूरस्थ-दुर्गम क्षेत्र में इस प्रकार के आयोजन होना सभी के लिये प्रेरणादायक है। बिल्जू मिनी स्टेडियम दुम्मर में कुल 46 टीमों को प्रवेश दिया गया। सिनीयर्स बालिका तथा 40+ वयस्क वयवर्ग का भी शो मैच का आकर्षण बना रहा। सभी खिलाड़ियों को क्लब की ओर से पुरस्कृत भी किया गया। बालिका वर्ग के विजेता बिल्जू कालौनी तथा उपविजेता बेस्टीज गर्ल्स मुनस्यारी रहीं। दोनों को नगद धनराशि तथा कप पुरस्कार में दिया गया. 40+ वयवर्ग वयस्कों में मुनस्यारी ओल्ड विजेता तथा उपविजेता ओल्ड स्टार दुम्मर की टीम रही, इन्हें भी उसी तरह पुरस्कृत किया गया।

आयोजन का मुख्य आकर्षण सिनीयर्स बालक वर्ग में 'टीम होप ए' विजेता 1-0 से विजयी रहे तथा उपविजेता दरांती की टीम रही। दोनों के बीच कड़ा मुकाबला हुआ और अन्तिम 2 मिनट समय शेष रहते टीम हॉप गोल दागने में सफल रही। विजेता टीम को बिल्जू क्लब की ओर से चमचमाता कप के साथ 20000/ रूपए से पुरस्कृत किया गया। उपविजेता टीम को कप 10000/ रूपए राशि से पुरस्कृत किया गया। मैच का मैन ऑफ द मैच प्रकाश कुमार दरांती, गोल्डन बूट बिनीत जंगपांगी फेंड्स फोरयीबर इमैजिंग प्लेयर दरांती के तरुण सिंह बरफाल चुने गए। मैच के मुख्य निर्णायक की भूमिका में सौरभ पंचपाल, सह निर्णायक दिव्यांशु सयाना, योगेश रिलकोटिया थे।

14 दिन तक चले इस टूर्नामेंट के बीच प्राकृतिक सौन्दर्यता से भरपूर मैदान में खेलोत्सव का सफल आयोजन में मुख्य अतिथि केदार लसह मर्तोलिया अध्यक्ष जोहार क्लब मुनस्यारी द्वारा अपने सम्भाषण में ग्रामीण अंचल में खेले जाने वाले बेहतरीन खेल की भूरी-भूरी प्रशंसा की। कहा इन आयोजनों का उद्देश्य प्रतिभाओं को निखारना, विकसित करने है। विशिष्ट नवराज सिंह पांगती द्वारा खिलाड़ियों की प्रतिभा की पहचान तथा आगे बढ़ाने हेतु सहयोग का आश्वासन दिया। लक्ष्मण सिंह पांगती लछबू अपने निराले अंदाज में बिल्जू कप आयोजन के सफलता पर क्लब के सदस्यों तथा ग्रामवासियों की सराहना करते की।

इस अवसर पर प्रधान पंकज सिंह बृजवाल, क्लब अध्यक्ष नवीन सिंह बृजवाल, कोषाध्यक्ष गिरधर सिंह बृजवाल, विशिष्ट क्लब के सदस्य दिगम्बर सिंह, जगदीश सिंह, रमेश वर्मा धीरज सिंह (अध्यापक), धीरज सिंह, सूरज सिंह, लोकेश बृजवाल, कवीन्द्र कुमार, ईश्वर सिंह महेता, राहुल कुमार पहाड़ी आदि सभी क्लब के सदस्यों ने उपस्थित दर्ज कराई।

आयोजन अववर पर मल्ला दुम्मर के गंगा सिंह जंगपांगी, किशन सिंह जंगपांगी सहित अतिथियों ने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हुए पुरस्कृत किया। समापन पर आयोजक मण्डल, ग्रामवासी प्रवासी बिल्जू बिरादरी को धन्यवाद प्रेषित करते इस संस्करण के समापन की घोषणा की। वाकेई चौदह दिन तक चला रोमांच का खेल हर छोटे-बड़े को तरंगित करते हुए अपनी जड़ों से जोड़ने वाला है।

पिघलता हिमालय स्थापना के 48वें वर्ष में
प्रवेश की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-
उत्तम सिंह पांगती
रिटा०जज
लोहनी की चक्की के निकट
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

सत्यवान सिंह जंगपांगी
(अ.प्रा.उपमहाप्रबन्धक दूरसंचार)
(शिव मन्दिर के निकट)
जोहार नगर भोटिया पड़ाव
हल्द्वानी

के०एस०रावत
शान्तिकुन्ज, छड़ायल नयाबाद
(निकट- सेंट जेबीयर स्कूल)
हल्द्वानी

चन्दा सिंह
'अराध्यम'
शान्ति विहार, बिठौरिया नं. 1
हल्द्वानी

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत
होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)